मानसश्री गोपाल राजू (वैज्ञानिक)

अ.प्र. राजपत्रित अधिकारी

ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र

30, सिविल लाईन्स

रूड़की - 247667 (उत्तराखण्ड)

तुलसी नहीं, यह तुलसी अमृत है

सनातन धर्म अथवा वैष्णव मत में आस्था रखने वाले सब व्यक्ति इस बात से परिचित हैं कि हिन्दू परिवारों के प्रत्येक घर में तुलसी का पौधा चिरन्तर से पूजा-पाठ का एक आवश्यक अंग रहा है। आस्था की पराकाष्ठ तो यहाँ तक है कि मृत्यु के समय जीवात्मा को गंगा जल के साथ यदि तुलसी दल का सेवन नहीं करवाया जाएगा तब तक उसकी सद्गति नहीं होगी। अथर्ववेद और आयुर्वेद ने तुलसी को चमत्कारिक

औषधीय गुणों का भण्डार होने के कारण ही मात्र तुलसी न कहकर इसको एक महाऔषधि, संजीवनी बूटी और तुलसी अमृत तक कह दिया है ।

दैनिक कर्म में तुलसी के प्रति आस्था और उसके प्रति पूजन कर्म इसीलिए सारे सनातनी एक मत से स्वीकार करते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि तुलसी में दैहिक, भौतिक और आध्यात्मिक तीनों सुखों को देने का गुण-धर्म विधि ने कूट-कूट कर भर दिया है।

तुलसी दास जी ने भी रामायण में लिखा है -

रामायुघ अंकित ग्रह, शोभा वरनि न जाई।

नव तुलसिकावृन्द तहँ, देखि हरष कपिराई।।

हनुमान जी जब सीता जी का पता लगाने लंका गए थे तब राक्षसों की उस महानगरी में तुलसी के पवित्र पौधे की सहायता से ही उन्होंने भक्त विभीषण को तलाशा था।

महिलाओं के लिए अनेक शास्त्रकारों ने तुलसी पूजन का विशेष महत्त्व बताया है। अनेक धर्म ग्रंथों में अध्यात्म की दृष्टि से तुलसी के अनेक विवरण मिल जाएंगे।

वर्ष के कार्तिक माह में देव उठनी एकादशी को भगवान विष्णु को प्रसन्न करके उनकी परम कृपा पाने के उदेश्य से तुलसी विवाह का प्रचलन सदियों से प्रचलित है। अनेकों लोग इसको एक उत्सव के रुप में मनाते हैं। यह उत्सव पर्व अमावश्या तक अर्थात पूरे पांच दिनों तक चलता है। पौराणिक कथाओं के अनुसार विष्णु जी ने दुष्ट राक्षस और तुलसी के पती जालंधर का वध कर दिया था। परन्तु पती की दुष्टता के बाद भी पतिव्रता धर्म का पालन करते हुए वह सती हो गयी थीं। उस चिता की भस्म से ही तुलसी का जन्म माना गया है।

तुलसी की पवित्रतता, त्याग और एक दुष्ट के प्रति पती धर्म निर्वाह के गुणों को देखते हुए ही विष्णु जी ने उनको अपनी पत्नी के रूप में अंगीकार किया था। यही नहीं

gopalraju

उनको वरदान भी दिया था कि जो कोई भी तुम्हारा विवाह श्रद्धा भाव से मेरे साथ करवाएगा वह परम सुखों को भोगता हुआ अन्ततः परम धाम को प्राप्त होगा।

शिवपुराण में वर्णन आता है कि विष्णु स्वरूप सालिग्राम विग्रह और तुलसी विवाह करवाने से दाम्पत्य जीवन सुख और समृद्धि से परिपूर्ण बनता है। जिन कन्याओं के विवाह में अड़चने आ रही होती है अथवा जहाँ पारिवारिक क्लेश और कलह के कारण जीवन जीना दूभर हो रहा होता है, वहाँ तुलसी पूजन समाधान का एक बहुत ही प्रभाव शाली उपक्रम सिद्ध होता है। मनवांछित जीवन साथी पाने को इसलिए ही हिन्दु परिवारों में तुलसी पूजन का चलन है।

तुलसी जी की कृपा पाने का सबसे सरल उपाय है पवित्रता और अपने घर-आंगन में सालिग्राम सहित उनको श्रद्धा भाव से स्थापित करना। यथाभाव नित्य सायंकाल धूप-दीप से उनका पूजन करके आरती उतारना। तुलसी नामाष्टक, तुलसी अष्टक, तुलसी नामावली, तुलसी स्तोत्र, तुलसी आरती आदि अथवा मात्र तुलसी मंत्र भी यदि श्रद्धा से नित्य जप किए जाए तो उनकी शीघ्र ही कृपा मिलती है।

घर की महिलाएं यदि घर-आँगन में तुलसी स्थापित करके मंत्र जाप करती हैं तो भगवान विष्णु का मनः संताप दूर करने वाली हरिप्रिया उनका जीवन सुख और समृद्धि से अवश्य ही भरती हैं।

gopal raju

तुलसी जी का नित्य जप मंत्र है-

सौभाग्यं सन्तति देवि,

धनं धान्यञ्च शोकशमनं,

कुरु मे माधवप्रिये।।

जहाँ तुलसी पौधे होते हैं वहाँ प्राकृतिक रुप से एक रक्षा कवच सा स्वतः ही बन जाता है और उस स्थान की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाती है, यह वैज्ञानिक परीक्षणों से भी सिद्ध हो चुका है।

एक इस बात का सदैव ध्यान रखें कि तुलसी दल चबाया नहीं जाता, उसको साबुत अथवा टुकड़े करके ही निगला जाता है। दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि तुलसी का किसी भी गणपति पूजन-अनुष्ठान आदि में प्रयोग सर्वथा वर्जित माना जाता है।

कहने का संक्षिप्त सार-सत यह है कि आयुर्वैदिक महत्त्व के साथ-साथ तुलसी में दैहिक, भौतिक और आध्यात्मिक तीनों सुखों को देने का गुण-धर्म विधि ने प्राकृतिक रूप में कूट-कूट कर भर दिया है। बस, उन गुणों से पूरा-पूरा लाभ प्राप्त करने का उचित भाव और श्रद्धा मन में होना चाहिए।

gopal raju

मानसश्री गोपाल राजू (वैज्ञानिक)

अ.प्र. राजपत्रित अधिकारी

ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र

30, सिविल लाईन्स

रूड़की - 247667 (उत्तराखण्ड)